RNI पं. सं. 38087/81 डाक पं. क्र. म.प्र. भोपाल/ 210/2018-20

समाचार भी, विचार भी

स्वदेश

भोपाल, बुधवार 11 दिसम्बर 2019 ■ वर्ष 54 (भोपाल 39) ■ अंक 62 ■ अगहन शुक्ल पक्ष चतुर्दशी, संवत् - 2076 ■ पृष्ठ 12 ■ मूल्य ₹ 2.00 ■ महानगर

भारत भवन में हुआ गांधी कथा का आयोजन, तीस देशो में अभी तक हो चुका वाचन

गांधी जी का जीवन श्रद्धा और पुरुषार्थ का महाकाव्य

स्वदेश संवाददाता, भोपाल

महात्मा गांधी के 150वें जन्मवर्ष पर देश की जानी मानी गांधीवादी चिन्तक एवं विचारक डॉ शोभना राधाकृष्ण ने भारत भवन में गांधी कथा का वाचन किया। संस्कृति मंत्री डॉ. विजयलक्ष्मी साधौ आज शाम संस्कृति विभाग द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 150वें जन्मवर्ष के अवसर पर गांधी-कथा में शामिल हुईं। इस मौके पर गांधीवादी चिंतक-कथाकार डॉ. शोभना राधाकृष्ण ने गांधी-कथा प्रस्तुत की। यह कार्यक्रम भारत-भवन के अंतरंग सभागार में हुआ। गांधी-कथा के पूर्व स्वाति भगत और उनके साथियों ने भजनों की सांगीतिक प्रस्तुति दी। डॉ. शोभना राधाकृष्ण ने कहा कि राष्ट्रपिता गांधी जी का जीवन श्रद्धा और पुरूषार्थ का महाकाव्य है। यही मेरे लिए गांधी-कथा की प्रेरणा का कारण भी है। डॉ. शोभना ने गांधीजी के व्यक्तित्व के पहलुओं पर विस्तार से अपनी बात कही। डॉ. शोभना ने कहा कि गांधी जी प्रत्येक कार्य को ईश्वर दत्त कार्य मानते थे तथा समय प्रबंधन, सत्य, संवाद, चरित्र के प्रति सजगता और मानवता को अपने कर्म यज्ञ में आहुति मानते थे। ये उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ थीं। डॉ. शोभना राधाकृष्ण अनेक देशों में गांधी कथा प्रस्तुत कर चुकी हैं। इस अवसर पर संस्कृति मंत्री डॉ. विजयलक्ष्मी साधौ, प्रमुख सचिव संस्कृति पंकज राग सहित भोपाल के नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

अपकार करने वाले पर भी उपकार करें

कथा वाचन में गीत-संगीत, धुन, प्रेजेंटेशन समाहित रहा। उनकी यह अनूठी गांधी कथा जो देश के अलावा दुनिया के लगभग तीस देशों में सराही गयी है, भोपाल में इनकी यह पहली प्रस्तुति थी। संस्कृति मंत्री डॉ विजयलक्ष्मी साधौ ने डॉ. राधाकृष्ण का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। डॉ. राधाकृष्ण ने अपनी कथा में बताया गांधी जी हर युग के रोल मॉडल है। वे जीवन के प्रति हमेशा सकारत्मक रहते थे। सत्य को परमेश्वर माना। गांधी जी कभी भय का आवरण अपने ऊपर नहीं चढ़ने दिया। किस तरह एक साधारण व्यक्ति आसाधारण व्यक्ति बना उसका वे उदाहरण है। अपनी गलती को समझते थे, पश्चाताप करते थे। समय का आदर करते थे। वे कहते थे कि गया हुआ समय वापस नहीं आता। वे सभी धर्म को मानते थे, सभी धर्म के लोगों से उनकी मित्रता थी। गांधी जी ने नई तालीम के महत्व को रेखांकित किया। गांधी कथा में मन वाणी कर्म में सत्य तू बोल, लगी रे लगन, लगी रे लगन, न ये तेरा, न यह मेरा, कोटि कोटि लोग गए, सत्याग्रह की परख आदि गीत की प्रस्तुति हुई।